بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 23 अगस्त 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

जलसा सालाना जर्मनी 2024 के सम्बंध में जलसे के उद्देश्य एवं आवश्यकताओं का विवेक पूर्ण बयान तथा कुछ दुआओं के विर्द (बार बार दोहराने) की विशेष तहरीक।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-23.08.24

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- अलहम्दुलिल्लाह आज जलसा सालाना जर्मनी शुरु हो रहा है। इस समय जर्मनी की जमाअत मुझे वहाँ जलसे में देखना चाहती थी किन्तु इंसान के साथ मानवीय आवश्यकताएँ भी लगी हुई हैं, स्वास्थय इत्यादि भी उसी का एक अंश है। इस कारण से डाक्टर के विमर्श से अन्तिम समय पर जर्मनी की यात्रा को स्थगित करना पड़ा और यही तय हुआ कि यहीं से जर्मनी जलसे के प्रोग्रामों में शामिल हुआ जाए तथा यहीं से जलसे में सम्मिलित होने वालों को सम्बोधित किया जाए। यह भी अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से ही होगा, दुआ करें कि अल्लाह तआला सामर्थ्य प्रदान करे।

यह भी अल्लाह तआला का उपकार है कि इस ज़माने के अविष्कारों में उसने सम्पर्क के साधन प्रदान किए। अनेक लोग जो भेंट करने के इच्छुक थे, उसकी व्यवस्था अल्लाह तआला फिर किसी समय कर देगा।

समस्त ड्यूटी करने वाले कार्य-कर्ताओं को मैं कहना चाहता हूँ कि मेहमानों की मेहमान नवाज़ी के लिए यथा सम्भव सेवा की भावना से काम करें। सुन्दर नैतिक आचरण की अभिव्यक्ति करें, हर एक विभाग का कार्य-कर्ता मुसकुराते हुए चेहरे के साथ मेहमानों का स्वागत करे। दुआएँ करते हुए काम करें। इस भावना

के साथ काम करें कि हमने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के बुलाने पर आए हुए मेहमानों की सेवा करनी है तथा जो चाहे प्रस्थिति हो जाए हमने अपने आचरण के स्तर बलन्द रखने हैं तथा सेवा करते चले जाना है। मेहमान भी जलसे के उद्देश्य को याद रखें तथा हर एक दुविधा को सहन करते हुए इन तीन दिनों में जलसे के उद्देश्य को सम्मुख रखें।

सदैव याद रखें कि हम पर अल्लाह तआला के पुरस्कारों में से एक महान पुरस्कार यह है जो हज़रत मसीह मौऊद अलै. के माध्यम से उसने हमें प्रदान किया है कि साल में एक बार हम सब जमा होकर अपनी नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के सामान करें। ऐसे प्रोग्राम बनाएँ जो हमें ख़ुदा तआला के निकट करने वाले हों। इस निश्चय तथा धारणा के साथ दिन व्यतीत करें कि हमने उच्चतम आचरण तथा एक दूसरे के हक़ अदा करने के उच्चतम स्तर प्राप्त करने हैं। आपस में प्यार मुहब्बत तथा सम्बंधों को बढ़ाना है, द्वेषों को दूर करना है, अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति का प्रयास करना है। हर प्रकार के व्यर्थ कामों से स्वयं को बचाना है। यही वे चीज़ें हैं जिनकी हज़रत मसीह मौऊद ने हमसे आशा की है तथा यही वह चीज़ है जो अल्लाह तआला को पसन्द है तथा इसी कारण उसने हमें इंसान तथा सर्वश्रेष्ट प्राणी बनाया है। जलसे पर आने वाले प्रत्येक अहमदी को ये बातें अपने सम्मुख रखनी चाहिएँ।

यदि अल्लाह तआला की मुहब्बत में बढ़ने, उच्च आचरण दिखाने, बन्दों के हक़ अदा करने तथा तक़्वा प्राप्ति की कोशिश नहीं हो रही तो जलसे में आने का उद्देश्य पूरा नहीं हो रहा। हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि मैं कदापि नहीं चाहता कि वर्तमान के पीरज़ादों (धार्मिक गद्दीधारी) की भांति केवल प्रत्यक्ष शान दिखाने के लिए अपने अनुयाईयों को एकत्र करूँ। बल्कि वह मूल उद्देश्य जिसके लिए मैं अवसर निकालता हूँ वह अल्लाह के प्राणियों का सुधार है।

अतः प्रत्येक अहमदी को यह बात अपने सम्मुख रखनी चाहिए। यदि इस उद्देश्य को पाने के लिए कोशिश करेंगे तो ही जलसे पर आने का लक्ष्य पूरा होगा। यदि जलसे पर आने के बावजूद अल्लाह तआला से सम्बंध स्थापित नहीं हुआ, आचरण में सुधार नहीं आया तो ऐसे सम्मिलित होने वालों के प्रति हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने अत्यंत निराशा प्रकट की है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- समस्त बैअत करके सम्मिलित होने वाले निष्ठावान लोगों पर स्पष्ट हो कि बैअत करने का अभिप्रायः यह है कि ता दुनिया की मुहब्बत ठंडी हो तथा अपने मौलाए करीम एवं रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत दिल पर छा जाए तथा ऐसी दुनिया की स्थिति का विचार पैदा हो जाए कि यह विनाश होने वाली है जिसके कारण आख़िरत की यात्रा कष्टदायक प्रतीत न हो।

सदैव याद रखें कि संसारिक सुविधाएँ एक अहमदी को दीन से हटाने वाली न हों। ये कारोबार तथा सांसारिक अनुकम्पाएँ एक अहमदी को ख़ुदा तआला का आभारी बनाएँ तथा ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रति अधिक से अधिक स्नेह दिल में पैदा हा। अतएव अपने तक़्वा के स्तर को बढ़ाने का प्रयास करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- ख़ुदा तआला ने जो इस जमाअत को बनाना चाहा तो उसका उद्देश्य यही है कि वह वास्तविक मअरिफत (ब्रह्मज्ञान) जो दुनिया से गुम हो गया था तथा वह वास्तविक तक़वा एवं पवित्रता जो इस ज़माने में नहीं पाई जाती, उसे पुनः स्थापित करे। फ़रमाया- ऐ वे समस्त लोगो जो अपने आपको मेरी जमाअत समझते हो! आसमान पर तुम उस समय मेरी जमाअत माने जाओगे जब तक़्वा की राहों पर आगे बढ़ोगे। फिर फ़रमाया- ख़ुदा की महानता अपने दिलों में बिठाओ तथा उसी की तौहीद का इक़रार न केवल अपनी ज़बान से बल्कि अमली रूप में करो, ताकि ख़ुदा भी अमली रूप में अपनी कृपा एवं उपकार तुम पर प्रकट करे।

अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इन उपदेशों को अपने सामने रखें, यही जलसे पर आने का उद्देश्य है। सदैव यह कोशिश होनी चाहिए कि मेरा प्रत्येक कर्म अल्लाह तआला की प्रसन्नता पाने के लिए हो। सदैव यह याद रहे तथा इस बात का ध्यान रहे तथा मस्तिष्क में यह बात सदैव बैठी रहे कि मेरा प्रत्येक कर्म एवं अकर्म ख़ुदा तआला की दृष्टि में है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. जलसा सालाना तथा अल्लाह की स्तुति के विषय में फ़रमाते हैं कि क्यूँकि यह जलसा अल्लाह की निशानियों में शामिल है तथा इस जलसे में शामिल होने का एक उद्देश्य हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने रूहानियत में उन्नति पाना बताया है तथा इसका एक महान साधन इबादत तथा अल्लाह की याद है और अपनी स्तुति के विषय में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि तुम अल्लाह को याद रखोगे तो अल्लाह भी तुम्हें याद रखगा। अतएव भाग्य शाली है वह व्यक्ति जिसको उसका स्वामी, उसका आक़ा, उसको पैदा करने वाला याद करे। अतः इस महत्त्व पूर्ण बात की ओर इन दिनों में हर किसी को अधिक ध्यान देना चाहिए, इसी संदर्भ में मैं एक तहरीक करना चाहता हूँ-

यह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रह. का एक सपना था कि उनको एक बुज़ुर्ग ने कहा कि यदि जमाअत का हर एक व्यक्ति, हर एक बड़ा 200 बार यह दरूद शरीफ़- سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ पढ़े, मध्यम आयु के लोग 100 बार तथा बच्चे तेंतीस तेंतीस बार पढ़ें और जो छोटे बच्चे हैं, उनको उनके माता-पिता स्वयं तीन चार बार यह पढ़वा दें, इसी तरह 100 बार इस्तिग़फ़ार करें। मैं इसमं यह शामिल करता हूँ कि 100 बार- رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ को भी दोहराएँ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रह. को सपने में यही दिखाया गया था कि यदि यह करोगे तो एक सुरक्षित क़िले में दाख़िल हो जाओगे, जहाँ शैतान कभी दाख़िल नहीं हो सकेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह बयान फ़रमाया कि एक साथ एकत्र होने वाले आपस के परिचय को बढ़ाएँ, अर्थात- आपस में प्यार एवं संपर्क को बढ़ाएँ। अतएव इन दिनों में आपस में सम्बंधों को बढ़ाने तथा सलामती फैलाने पर अधिक ध्यान दें। पहले से स्थापित सम्बंधों में यदि कोई द्वेष पैदा हो गया हो तो उसको दूर करने की भरसक चेष्टा करें। अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने के लिए व्यर्थ की बातों से बचें। न केवल यह कि लड़ाई झगड़े से बचें बल्कि अपने जो पुराने लड़ाई झगड़े हैं, उन पर भी एक दूसरे से माफ़ी मांगें। अहंकार की भावनाओं से निकल

जाएँ। शिकायतें आती हैं कि छोटी छोटी बातों पर हाथा पाई हो जाती है, फिर निज़ाम को क़ायम रखने के लिए उन्हें दंड भी देने पड़ते हैं, जिसके कारण कष्ट होता है, यह नहीं कि ख़ुशी से दंड दिया जाता है। सदैव याद रखें कि जमाअत की प्रतिष्ठा को हमने स्थापित करना है इस लिए यदि निज़ाम अथवा ख़लीफ़ ए वक़्त किसी को सज़ा देता है तो जमाअत की प्रतिष्ठा क़ायम रखने के लिए देता है, क्यूँकि जमाअत की पवित्र प्रतिष्ठा समस्त रिशतों से सर्वोप्रिय एवं अधिक है। इस संदर्भ में ओहदेदारों का भी अधिक दायित्व है इस लिए इनमें सहन शक्ति भी अधिक होनी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि तुम दिल के दरिद्र बन जाओ। सामान्यतः मानव जाति से सहानुभूति करो जबकि तुम इन्हें स्वर्ग दिलाने के लिए प्रवचन करते हो। फ़रमाया- ख़ुदा तआला के अधिकारों को दिल में भय के साथ पूरा करो कि तुम इनके विषय में पूछे जाओगे। नमाज़ों में बहुत दुआ करो, ता ख़ुदा तुम्हें अपनी ओर खींचे और तुम्हारे दिलों को साफ़ करे। फ़रमाया- जब तक इंसान ख़ुदा से शक्ति प्राप्त न करे किसी बुराई के दूर करने में सक्षम नहीं हो सकता। अतः ये स्तर हैं जा हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने बयान फ़रमाए हैं, इन्हें हमें अपने अन्दर पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए। यदि आपके आचरण अच्छे होंगे तो यहाँ आने वाले मेहमान भी अच्छा प्रभाव लेकर जाएँगे। यह अच्छे आचरण की अभिव्यक्ति एक गुप्त तबलीग़ का काम करेगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किस दर्द एवं तड़प से अपनी जमाअत के लिए दुआ की है उसका एक नमूना मैं आपके सामने पेश करता हूँ। आप अलै. फ़रमाते हैं- दुआ करता हूँ, तथा जब तक मुझ में जीवन का संकेत है किए जाऊँगा, और दुआ यही है कि ख़ुदा तआला मेरी इस जमाअत के दिलों को पाक कर तथा अपनी रहमत का हाथ लम्बा करके उनके दिल अपनी ओर फेर ले तथा समस्त उपद्रव एवं द्वेष उनके दिलों से उठा दे तथा आपस मं सच्ची मुहब्बत प्रदान कर दे।

अल्लाह तआला करे कि यह जलसा समस्त बरकतें समेटने वाला हो। दुनिया के हालात के लिए भी दुआ करें। अपने देश के लिए भी बहुत दुआ करें। जब हम विशुद्ध होकर अल्लाह तआला के आदेशों, इस्लाम की शिक्षाओं तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उपदेशां तथा हज़रत मसीह मौऊद अलै. के निर्देशों पर अमल करने वाले होंगे, तब निःसन्देह अल्लाह तआला हमारी दुआएँ सुनेगा तथा हम दुनिया के मार्ग दर्शन का माध्यम बनने वाले होंगे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, संपर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131